

GURUMANDAL SERIES NO. XXVIII

TRIPURA RAHASYAM

MAHATMYA KHANDAM

WITH

HINDI TRANSLATION

VOLUME I

5, CLIVE ROW
CALCUTTA-1

VIKRAM ERA
2027

FIRST EDITION
2000

A. D.
1970

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

त्रिपुरारहस्य के माहात्म्यखण्ड की विषयानुक्रमणिका

अध्यायसंख्या

विषयविवरण

पृष्ठसंख्या

- १ 109 सर्वप्रपञ्च के कारणभूत ॐ शिवतत्त्व और ह्रीं शक्तितत्त्व के द्वारा प्रतिपाद्यप्रतिपादकभाव से आगे के ग्रन्थविषयक वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण । १
- दक्षिण देश में मलयाचल की प्राकृतिक सुषमा और उसकी उपत्यकाओं तथा पर्वत के ऊपर की भूमि के मनोरम दृश्य का वर्णन । ३
- महर्षिप्रवर पुण्यपुञ्ज श्रीपरशुराम के आश्रम का वर्णन तथा हारितायन का आगमन । ४
- श्रेयः प्राप्ति के लिये अपने गुरु श्रीपरशुराम को उसका प्रश्न करना । ५
- महाविष्णु स्वरूप दत्तात्रेय का पूर्वसमय में साक्षात् श्रीत्रिपुराम्बा के विषय में हुए सम्वाद का स्मरण तदनुसार अपने शिष्य सुमेधा को भगवतीवाला की दीक्षा देना । ७
- सुमेधा हारितायन को साधना करने से बालाम्बा का स्वप्न में दर्शन और हारितायन को स्वरूपाविर्भूत बालाम्बा के साक्षात् दर्शन होने की सत्यता का आकाशवाणी द्वारा निश्चय, श्रीवाला की दीक्षा लिये हुए सुमेधा का फिर अपने गुरुदेव के समीप जाना और भगवती परा को प्रसन्न करने का साधन बताने से उसे सिद्धि प्राप्त होना । ११
- ब्रह्मा की सभा से आये श्रीनारद एवं हारितायन सुमेधा का सम्वाद । १३
- २ ५ श्रीविद्यातत्त्व के विषय में देवर्षि नारद का गुरुसम्प्रदाय के साथ त्रिपुरारहस्य का स्फोरणवर्णन । १५
- त्रिपुरा के गूढतत्त्व का सविस्तर वर्णन । १५
- श्रीनारद के ध्यान करने पर ब्रह्मलोक से समागत पितामह ब्रह्मा का शुभागमन और श्रीब्रह्मा द्वारा देवर्षि से अपने स्मरण करने का कारण पृच्छना । १६
- श्रीब्रह्मा द्वारा त्रिपुरा भगवती के माहात्म्य का हारितायन सुमेधा द्वारा सुविशाल ग्रन्थ के रूप में रचना के श्रेय प्राप्त होने और उसे श्रीविद्या के साक्षात्कार में पूर्वजन्म की इसी भागवती साधना के कारण भगवती सरस्वती का वरदान जिससे इस महामहिम ग्रन्थ का आविर्भाव का सुअवसर प्राप्त होना; शिवतत्त्व से शक्तिपर्यन्त सम्पूर्ण जगत् की कारण भगवती त्रिपुरा का वर्णन । २३

अध्यायसंख्या

200

विषयविवरण

- ३ सरहस्य त्रिपुरामाहात्म्य का वर्णन ।
महर्षि जामदग्न्य परशुराम का चरित्र वर्णन ।
- ४ श्रीरामचन्द्र को स्वशक्तिप्रदान का वरदान ।
अत्यधिक निर्वेदप्राप्त परशुरामजी का सम्बर्त से मिलन;
परशुराम को सम्बर्त के वास्तविक रूप के प्रति सन्देह ।
सम्बर्त एवं भार्गव परशुराम का सम्बादवर्णन ।
स्वात्मतत्त्व का संक्षेप से दिग्दर्शन तथा उसे जनकर आत्मोपलब्धि का उपदेश ।
अवधूत महर्षि सम्बर्तजी द्वारा गुरु की प्रशंसा तथा दत्तात्रेय के पास जाने को परशुराम को आदेश देना ।
- ५ श्रीपरशुराम का गन्धमादन को प्रस्थान ।
मार्ग में जाते हुए उसका मनुष्यशरीर के नाना दोषों पर ऊहापोह करना ।
संसारि लोगों की दुःखपूर्ण अवस्था का वर्णन ।
जगत् की असारता का चिन्तन ।
परशुराम का दत्तात्रेय के आश्रम में प्रवेश और महा अवधूताचार्य श्री दत्तगुरु के दर्शन ।
दत्तात्रेय से भार्गव राम का प्रश्न करना और श्री गुरुदेव दत्तात्रेय द्वारा उनका उत्तर ।
श्रीगुरुवर्य दत्तात्रेय के आदेश से राम का आत्मप्राप्ति के लिये निश्चय करना ।
भार्गव राम को श्रीदत्तगुरु का सदुपदेश ।
प्रसङ्गप्राप्त परमशिवअद्वैततत्त्व का उपदेश और त्रिपुरा की आराधना का आदेश ।
देवगण का अपनी अपनी श्रेष्ठता बतलाने को परस्पर में विवाद ।
श्रीपराम्बा के विषय में पुराकल्प की देवगण की कथा का उपक्रम; उनके परस्पर विवाद में अग्नि की श्रेष्ठता का वर्णन ।
देवगण को समझाने के लिए विष्णु की मध्यस्थता करना ।
त्रिदेवों द्वारा भगवती त्रिपुरा का स्मरण करना ।
त्रिदेवों को भगवती का दर्शन सर्वप्रथम ब्रह्मा द्वारा भावमय स्तवपाठ करना तथा विष्णु द्वारा भगवती की स्तुति ।
पशुपति शिव के द्वारा त्रिपुराम्बा का स्तवन ।
देवी द्वारा तीनों देवों को सान्त्वनाप्रदान ।
अग्नि की पराजय ।
श्रीदेवी का वायु के साथ सम्बाद ।
- ६ भगवती के प्रतिबल के विषय में इन्द्र का सन्देह ।

अध्यायसंख्या

विषयविवरण

पृष्ठसंख्या

देवी से इन्द्र का विवाद ।	८६
बृहस्पति द्वारा भगवती त्रिपुरा की स्तुति ।	९३
देवगण द्वारा भगवती की स्तुति करने पर त्रिपुरा द्वारा स्वप्रभाव को प्रकाशित करना ।	९५
विष्णु द्वारा इन्द्रादि देवगण को भगवती के दिव्यप्रभाव का वर्णन ।	९७
सभी देवगण का भगवती के परमोद्यमप्रभाव के प्रति आश्चर्य होना और त्रिदेवों का स्वधामगमन और इस प्रकार इन्द्रादि देवताओं का मोहनाश होना ।	९९

१०

भगवती के त्रिपुराख्यान का निरूपण ।	१००
भगवती द्वारा तीन रूप धारण करना ।	१०१
सृष्टि के विषय में परशुराम की शंका करना ।	१०३
ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की रचना में तपस्या करने के बाद नानाविध उपायों से उसे आरम्भ करने के विषय में भार्गव परशुराम को श्रीदत्तात्रेय का उपदेश ।	१०५
बढ़ती हुई सृष्टि के विषय में ब्रह्माजी द्वारा तप से सन्तुष्ट की हुई भगवती को अपनी बाधाएँ बताना ।	१०७
ब्रह्मा तथा मृत्यु का सम्वादवर्णन ।	१०९
जगत्कृत्य से अत्यन्त संतुष्ट त्रिदेवों का भगवती को प्रसन्न कर उनसे अपना अभीष्ट सिद्ध करने का प्रयत्न ।	१११
ब्रह्मादिदेवगण को स्वशक्तिप्रदान करने के लिये अपने अंश से श्रीलक्ष्मी, पार्वती और सरस्वती का आविर्भाव करना तथा उनकी विच्छिन्ति का वर्णन ।	११३
त्रिपुराख्यान के चरित्र के श्रवण का फल ।	११५

११

भगवती के त्रिपुराख्यान का वर्णन ।	१२०
बृहस्पति के समक्ष देवराज इन्द्र का आत्मनिवेदन ।	१२१
देवराज द्वारा ब्रह्मा के पास सब देवगण सहित बृहस्पति के निर्देशन में ब्रह्मलोक में गमन तथा ब्रह्मा की सभा का वर्णन ।	१२३
श्रीब्रह्मा और देवराज का परस्पर सम्वाद ।	१२५

१२

भगवती रमा का उपाख्यान—कामदेव की कथा ।	१२७
देवगण को लक्ष्मी का वरदान ।	१२९
तपस्या से प्रसन्न भगवती श्री का आविर्भाव ।	१३१
देवगण के सभी कार्यों में सहायताप्रदान करने के लिये लक्ष्मी द्वारा कामदेव को समर्पण करना ।	१३३
कामदेव का उपाख्यान ।	१३५

१३

लक्ष्मी तथा कामदेव का उपाख्यान ।	१३६
----------------------------------	-----

अध्याय संख्या

विषयविवरण

मर्त्यगण को वश में करने के लिये बालक काम का मर्त्यलोक में आकर जनगण को आवाहन ।
मर्त्यगण के साथ काम का भीषण युद्ध ।
राजा शेखर के मन्त्रियों द्वारा अपने स्वामी से इस उद्धत काम को दवाने की मन्त्रणा करना ।
साम, दाम, दण्ड एवं भेद इन नीतियों का प्रतिपादन ।
वर्धन राजा का अपने इष्टदेव महादेव को सन्तुष्ट करने को तपस्यार्थ जाना ।

१४

भगवान् शंकर द्वारा अजेय होने का वरदान पाने को तप करते हुए राजा को दर्शन देना ।
राजा द्वारा शंकरस्तुति ।
वर्धन को भगवान् शिव का वरदान ।
राजावर्धन का काम से युद्ध का आरम्भ करना और राजा के अमात्य सुधृति द्वारा नगर की रक्षा के लिये प्रयास ।
शिवकवच द्वारा वीरपुरुषों की रक्षा का विधान ।

१५

श्रीनारद के प्रबोधन करने से देवराज इन्द्र का कामदेव की सहायता के लिये तैयार हो जाना ।
कामदेव का युद्ध के प्रति अत्यधिक उत्साह ।
काम की सहायता करने के लिये इन्द्र के पुत्र जयन्त का समुत्साह ।
सुधृति तथा वसुगण की परस्पर वार्त्ता ।
सावित्र एवं रणधीर का युद्ध में कौशल वर्णन ।

१६

जयन्त एवं रणधीर का परस्पर में युद्ध ।
जयन्त एवं रणधीर की युद्धकथा ।
युद्ध में रणधीर को मूर्च्छित कर देने पर भीम का कामदेव के साथ मर्त्ययुद्ध में पराक्रम दिखाना ।
देवगण से युद्धहेतु राजपुत्रों द्वारा पूरी साजसज्जा करना ।

१७

भीम आदि महारथियों द्वारा रणक्षेत्रमें युद्ध के कौशल का प्रदर्शन ।
वीरसेन के द्वारा युद्ध में प्रभूत पराक्रम व्यक्त करना ।
शत्रुञ्जय और कुबेर के गदायुद्धका निरूपण ।
शत्रुञ्जय के गदायुद्ध के लाघव से कुबेर का उसकी प्रशंसा करना ।
वरुण और शत्रुघ्न का आपस में युद्ध ।
वरुण तथा समरतापन का युद्ध ।
यम एवं सुधृति का युद्ध ।

१८

राजपुत्रों से युद्ध करनेपर हराये हुए देवराज इन्द्र प्रभृति देवगण को बाँध लेनेका निरूपण ।

अध्यायसंख्या

विषयविवरण

पृष्ठसंख्या

	गौरी के शुभजन्म के उपलक्ष्य में पिता पर्वतराज के द्वारा ब्राह्मणगण को नानाविध दान ।	२६५
	नारद एवं हिमवान् का सम्वाद ।	२६७
	हिमवान् को स्वपुत्री के लिये नारद द्वारा योग्यवर के रूप में वरण के लिये श्रीविष्णु के सुन्दर गुणों का वर्णन करना ।	२६६

३०	अपने पिता नगराज को नारद से प्रेरणा पाने के कारण विष्णु को उसका वर बनाने के अभिप्राय में अपनी असहमति होने से गौरी का अपने इष्टपति की प्राप्ति के लिये तप करने को अज्ञातस्थान में जाना ।	३०१
	भगवती का ज्ञानकलिकास्तोत्र ।	३०३
	गौरी के समक्ष भगवती त्रिपुराम्बा का आर्चिर्भाव ।	३०५
	गौरी के सामने सखियों में से एक के द्वारा पिण्डगृह में सर्वांशतया माता आदि की आकुलता का वर्णन ।	३०७
३१	हिमालय द्वारा गौरी के अन्वेषण का भगीरथ प्रयत्न ।	३०६
	गौरी के वियोग से अत्यधिक विलाप करते नगराज हिमालय को दूत द्वारा अपनी पुत्री का वृत्तकथन ।	३११
	शोकाकुल हिमालय को स्वपुत्री का वृत्तान्त वर्णन करना ।	३१३
	गौरी का अपना अन्तर अभिप्राय कहना ।	३१५
	नारद एवं हिमवान् का सम्वाद ।	३१७
	विष्णुदूतों द्वारा नगराज के प्रदेश तथा राजधानी के लोगों पर अत्याचार करने पर स्वपुत्री सहित मेनाव हिमाचल द्वारा कुलगुरु कश्यप द्वारा सान्त्वना देना ।	३१६
३२	पुरोहित के द्वारा वस्तुस्थिति वर्णन करने पर मेना द्वारा गौरी की प्रार्थना ।	३२१
	स्वस्वरूप स्थित गौरी द्वारा भीषण आकृतिका धारण करना ।	३२३
	उस विशाल भीषण आकार से भयत्रस्त उपस्थित देवगण द्वारा प्रार्थना ।	३२५
	हिमाचल द्वारा विष्णु से क्षमा मांगना ।	३२७
	गौरी को वधू बनाकर लाने का अनुरोध ।	३२६
	ब्रह्मा द्वारा गौरी के साथ विवाह करने को शंकर को बुलाना ।	३३१
	गौरी का शिव के साथ मंगलविवाह ।	३३३
३३	विष्णु को ज्वालामुखी देवी द्वारा सुदर्शन चक्र देना ।	३३४
	विष्णु को सुदर्शन की प्राप्ति के विषय में दत्तात्रेय-परशुराम-सम्वाद में अवान्तर कथा ।	३३५
	ज्वालामुखी देवी को विष्णु द्वारा स्वतपस्या द्वारा प्रसन्न करना ।	३३७
	ताराशंकर पद्म द्वारा इन्द्र का पराभव ।	३३६
	बृहस्पति को इन्द्र द्वारा अपनी स्थिति कहना और इन्द्र को गौरी का दर्शन होना ।	३४१

अध्यायसंख्या

विषयविवरण

पृष्ठसंख्या

३४

सन्तान के विषय में भगवती गौरी का देवराज इन्द्र के समक्ष स्पष्टीकरण ।
पुत्रप्राप्ति में बाधक ऋषिपत्नी के शाप का वृत्तान्त ।
भूलोकस्थित विप्रगण के ऊपर अपना अधिकार करने को देवगण द्वारा विष्णुप्रभृति सुरनायकवृन्द से मन्त्रणा ।

पुत्रप्राप्ति होने का शिव को शाप है इस विषय में भगवती गौरी का इन्द्र से सम्वाद ।

श्रीविष्णु की प्रार्थना ।

श्रीगौरी के उपाख्यान में सम्पूर्ण चराचर को अपने में लय करनेवाले लिंग में शक्तियुक्त त्रिदेवों का अन्तर्भाव और उनके तुरीयपद होने का वर्णन ।

शिवपूजा में लिंग के माहात्म्य का वर्णन ।

लिंगपूजा ही उत्कृष्ट है इसके लिए भगवती त्रिपुरा का वरदान ।

इन्द्र एवं कामदेव का सम्वाद ।

शिवजी को पराजित करने के लिए सज्जित काम का अपनी पत्नी से वार्त्तालाप ।

लक्ष्मी द्वारा अपने साथ रति को लिवा लाना ।

३५

लक्ष्मी के अनुरोध से त्रिपुरा द्वारा काम को कामाक्षीरूप से अपने नेत्र में समाविष्ट कर लेना ।
भगवान् शिव का कामदहन ।

दत्तात्रेय एवं भार्गव के सम्वाद में देवस्वामी कार्तिकेय का जन्म ।

विधाता आदि देवगण द्वारा कार्तिकेय जन्म की प्रार्थना भगवान् शिव का गौरी के साथ संगम ।

भूमि तथा अग्नि द्वारा शिव के वीर्य को धारण करने में अममर्थ होने पर ब्रह्मा के कहने से उसे गर्गाद्वारा धारण करना ।

शरीरों के वन में कुमार स्वामी कार्तिकेय का आविर्भाव ।

स्कन्द द्वारा क्रौञ्चपर्वत का विदारण करना ।

ब्रह्माजी द्वारा सनत्कुमार रूप में स्कन्द के पूर्वजन्म की कथा को कहना ।

गौरी के सहित भगवान् शंकर का सनत्कुमार के संनिकट जाना ।

कार्तिकेय के पूर्वजन्म के विषय में श्रीशंकर एवं सनत्कुमार का सम्वाद ।

भगवती पार्वती तथा श्रीशंकर द्वारा सनत्कुमार का वर्णन ।

भगवती सावित्री का वृत्तान्त ।

सावित्री एवं ब्रह्मा के कलह में श्रीविष्णु तथा शिव के द्वारा मध्यस्थता ।

यज्ञ में ब्रह्मा द्वारा सावित्री का आवाह ।

क्रुद्ध हुई सावित्रीद्वारा यज्ञ में अत्यधिक कोलाहल मचाना ।

३६

अध्यायसंख्या	विषयविवरण	पृष्ठसंख्या
३८	देवगण द्वारा संकट से त्राण पाने के लिये त्रिपुरा भगवती की प्रार्थना । श्रीब्रह्मा के यज्ञ में त्रिपुरा की आज्ञा से शान्तिस्थापन का वर्णन ।	३८७ ३८६
३९	त्रिपुरा भगवती के दर्शन करने के अनन्तर श्रीब्रह्मा की जिज्ञासा की शान्ति के लिये गोपकन्या के पूर्व जन्म का वृत्तान्त । हर्यक्ष के द्वारा गोपवधू के साथ बलात्कार का वर्णन । त्रिपुरा के कहने से सावित्री को सन्तोष होना । स्वरवर्णादिरूपा गायत्री का परा, पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी इन चार प्रकार की वाणी का स्वरूप । गोपराज द्वारा गायत्री की प्रार्थना । सावित्री का पर्वत में रहकर ब्रह्मा के साथ यज्ञ कार्य सम्पन्न करना ।	३९० ३९१ ३९३ ३९५ ३९७ ३९६
४०	श्रीदत्तभार्गव के सम्वाद में द्वापर युगों में गोप के घर में विन्ध्यवासिनी के अवतार का वृत्तान्त । देवगणद्वारा देवीकी स्तुति करना । देवों के द्वारा मातृकास्तुति । मातृकास्त्व के अनन्तर भगवतो के विन्ध्यवासिनीरूप का वर्णन । संकट के निवारण के लिये देवी द्वारा देवगण को उपाय कहना । कंस के द्वारा नन्द के घर से वसुदेव द्वारा लायी हुई कन्या को उसे देने पर शिला पर मारने से उसका आकाश में गमन और आकाशवाणी । गोपियों द्वारा भगवती कात्यायनी का व्रत करना । श्रीभगवती कात्यायनी के व्रत का विधान ।	४०० ४०१ ४०३ ४०५ ४०७ ४०६ ४११ ४१३
४१	कात्यायनी देवी का द्वापर में विन्ध्यवासिनी रूप से अवतारधारण वर्णन । भगवती के द्वारा तीन रूपों को धारण करना । भावी कलियुग में जनता के उत्पथगामिनी होने से उन्हें सन्मार्ग पर लाने को देवगण द्वारा भगवती को अनुरोध करना ।	४१५ ४१७ ४१६
४२	श्रीभगवती चण्डिका के माहात्म्य का वर्णन । दैत्यों द्वारा स्वर्ग से निकाले गये देवगण की दुर्दशा । विष्णु के कथन से भगवती को प्रसन्न करने पर देवकार्य के सम्पन्न करने को भगवती पार्वती को भेजना । काली के द्वारा चण्ड एवं मुण्ड दैत्य का सिर फोड़ना । दैत्यराज के दूत सुग्रीव के द्वारा दैत्यपति के समीप भगवती गौरी द्वारा प्रति सन्देश भेजना ।	४२१ ४२३ ४२५ ४२७ ४२६
४३	देवी गौरी द्वारा धूम्रलोचन, चण्ड-मुण्ड तथा रक्तबीज राक्षसों का वध होने पर देवी को पराजित करने के लिये शुम्भ का अपनी सेना सहित आगमन । शुम्भ की विशाल सेना की प्रशंसा ।	४३१ ४३३

अध्यायसंख्या

विषयविवरण

४४

रक्तबीज के नाश कर दिये जाने पर चण्डिका से युद्ध करने को निशुम्भ का आगमन ।

केवल मात्र देवी का शुम्भ से युद्ध ।

शुम्भादि के वध के अनन्तर विष्णु द्वारा श्रीदेवी की स्तुति करना ।

श्रीदेवी द्वारा देवगण के हितार्थ शुम्भादि दैत्यों के वध किये जाने का निरूपण ।

भगवती कालिका के चरित्र का वर्णन ।

“दिव्य स्त्रियों को छोड़कर तुम्हारा कोई भी विनाश नहीं कर सकता” इस प्रकार कालखंज दैत्यों की तपस्या से प्रसन्न हो ब्रह्मा का वरदान ।

भगवती त्रिपुरा के रूप के लावण्य का वर्णन ।

काली के द्वारा भगवान् सदाशिव को पति रूप में वरण करना ।

ब्रह्मादि देवगण द्वारा कालिका की स्तुति ।

महाकालेश एवं भगवती कालिका के संगमकाल में भगवती देवी को प्रतिबोध ।

४५

दुर्गाचरित्र में पतिव्रता स्त्री का माहात्म्य ।

पतिव्रता सुमित्रा (सानुमती) द्वारा वायु का निरोध ।

नारद द्वारा अन्वेषण करने पर पतिव्रता को छेड़ने से वायु का निरोध हुआ, इसे जान देवगुरु के आदेश से इन्द्र का महर्षि मुद्गल के आश्रम में कुबेर, वरुण एवं अग्नि के साथ जाना । महर्षि के कथनानुसार सानुमती को प्रसन्न करने के लिये इन इन्द्रप्रमुख देवगण का महर्षि के आश्रम में नानाविध सेवाव्रतों का पालन करना ।

शची का साध्वी के शाप से महिषीरूप का धारण करना और महिषी को पुत्र की प्राप्ति उसका अजेय हो त्रिलोक को त्रासयुक्त करना ; देवगण का इन्द्र की अध्यक्षता में संकट को ढालने के लिये विष्णु एवं शिव के समीप जाकर उपाय पूछना । उनके द्वारा देवी की प्रार्थना करने का परामर्श ।

भगवती द्वारा अपने दिव्य रूप को धारण कर महिषासुर के वध के लिये साज-सज्जायुक्त होना ।

४६

देवी द्वारा राक्षसराज महिष की सेना को पराजित करने पर त्रैलोक्य के कण्टक इस असुरराज के वध से समस्त देवगण द्वारा भगवती की स्तुति ।

महिषदैत्य की सेना से सिंह का युद्ध ।

सिंह के प्रबल पराक्रम के आगे दैत्य का पराभव ।

अम्बिका एवं महिषासुर के बीच में युद्ध ।

भगवती के द्वाविंशनाम (बत्तीसनामों) मालास्तोत्रम् का विवरण ।

देवगण द्वारा देवी की स्तुति तथा देवी की पूजा काविधान के साथ भगवती का अन्तर्धान करना ।

४७

काम के पुनरुद्भव के कथानक का निरूपण ।

श्रीदेवीमाहात्म्य की उत्कृष्टता ।

अध्यायसंख्या	विषयविवरण	पृष्ठसंख्या
	देवी को सन्तुष्ट करने को देवगण द्वारा काम को फिर से जीवित करने की प्रार्थना ।	४८१
	ललिता द्वारा काम को वरदान ।	४८३
	काम के उज्जीवन के बाद शङ्करांश से भगवती गिरिजा में स्कन्द का आविर्भाव ।	४८५
४८	भगवान् श्रीविष्णु द्वारा मोहिनी रूप से शंकर को मोहित करने का प्रश्न ; भगवान् विष्णु द्वारा साठ हजार वर्ष तक त्रिपुरा की आराधना ।	४८७
	देवीमाहात्म्य में श्रीविष्णु द्वारा मोहिनीरूप के धारने की उत्कृष्टता का निरूपण ।	४८९
	श्रीविष्णु द्वारा मोहिनीस्वरूप से शिव का सम्मोहन ।	४९१
	त्रिपुरारूप से भगवती का द्वादश पीठों में नित्य विराजमान होना ।	४९३
४९	ललितामाहात्म्य ।	४९५
	त्रिपुरा के माहात्म्य के विषय में ह्यग्रीव तथा अगस्त्य का सम्वाद ।	४९७
	राक्षसराजभण्ड के प्रबल प्रताप का वर्णन ।	४९९
	भण्ड के द्वारा त्रैलोक्य का विजयवर्णन ।	५०१
५०	शिवजी को प्रसन्न करने के लिये दैत्यराज भण्ड की तपस्या का वर्णन ।	५०३
	उसकी उग्र तपस्या से इन्द्र के आसन का डगमगाना ।	५०५
	श्रीशिव से वर प्राप्तकर भण्ड द्वारा लोकों को त्रस्त करना ।	५०७
	शून्यकपुर में भण्ड के वैभव का वर्णन ।	५०९
	गणेश एवं भण्ड का युद्धकौशलवर्णन ।	५११
	गौरी से पराजित भण्ड का ब्रह्मादि देवगण की मध्यस्थता से शून्यकपुर को लौट जाना ।	५१३
५१	ललिता माहात्म्य के प्रकरण में भण्ड से निष्कासित देवराज प्रभृति को देवगण के गुरु बृहस्पति द्वारा आश्वासन तथा ललिता को प्रसन्न करने के हेतु तपस्या का उपदेश ।	५१४
	देवगण द्वारा तन्त्र मार्ग से यज्ञ करने पर भगवती का प्रसन्न होकर चिदग्निकुण्ड से आविर्भाव ।	५१७
	भगवती की लोकोत्तर अद्भुत शोभा का वर्णन ।	५१९
	श्रीबृहस्पति द्वारा भगवती त्रिपुरा की स्तुति ।	५२१
	पराम्बा की स्तुति ।	५२३
	प्रसन्न हुई भगवती द्वारा देवगण को अभीष्ट वरदान देना ।	५२५
५२	भगवती से आश्वस्त हुए देवगण द्वारा उनके गुरु बृहस्पति के आदेश से देवी के स्वरूप दर्शन के लिये श्रीसूक्त का जपविधान ।	५२६
	इधर श्रुतवर्मा द्वारा देवगणको पराजित करने के लिये मन्त्रणा ।	५२९
	श्रुतवर्मा के भाषण की सदोन्मत्तद्वारा भर्त्सना ।	५३१
	ज्वालामालिनिका द्वारा दैत्यगण के मार्ग को रोकने के लिये अग्नि की ज्वाला का प्रसार करना ।	५३३

अध्यायसंख्या

विषयविवरण

- देवगण द्वारा उत्साहपूर्वक भगवती का पूजन करना ।
- ५३ ललितामाहात्म्यप्रकरण ।
हयग्रीव द्वारा अगस्त्य के प्रति लक्ष्मीसूक्तविधान का कथन ।
लोपामुद्रा को अपने पिता के गृह में श्रीदेवीदीक्षा की प्राप्ति ।
देवी के श्रीसूक्तविधान का वर्णन ।
श्रीदेवी के श्रीपुर के लिये ब्रह्मा द्वारा विश्वकर्मा को उपदेश ।
- ५४ श्रीपुर का निरूपण ।
लघुश्यामला का वर्णन
श्रीचक्र का वर्णन ।
- ५५ श्रीब्रह्मा एवं विश्वकर्मा का सम्वाद ।
ब्रह्मादि देवगण के द्वारा व्यक्त स्वरूप में अपने पुर में निवास हेतु भगवतो को प्रार्थना करना ।
देवी के द्वारा श्रीब्रह्मा को अपने आसन के लिये आदेश ।
सदाशिव द्वारा देवी की व्यक्त आकृति का नामकरण ।
अपने समानशीलसम्पन्न पुरुष के वाम अङ्ग में भगवती की स्थिति ।
श्रीपुर में कामेश्वर भगवान् की गोद में स्थित श्रीदेवी के शक्तिमण्डल के निर्माण का वर्णन ।
- ५६ श्रीब्रह्मा एवं विश्वकर्मा का सम्वाद ।
पराशक्ति के द्वारा अपने अद्भुत स्थान आदि की रचना का वर्णन ।
श्रीचक्र का वर्णन ।
मुद्रादेवी वर्णन के सहित ब्राह्मी माहेश्वरी आदि का वर्णन ।
देवी शक्तियों के नाम व स्थान का वर्णन ।
- ५७ श्रीचक्रदेवतागण का वर्णन ।
स्वअभीष्टस्थान की प्राप्ति के लिये दशशक्तियों द्वारा तपस्या का वर्णन ।
- ५८ ज्ञानानन्द रूपी शक्ति का पिङ्गला इडा के सहित माहात्म्य कथन ।
चिन्तामणिगृह में चित्ति शक्ति की प्रधानता का ब्रह्मा द्वारा वर्णन ।
श्रीदेवी कृपा से सायुज्य पर्यन्तपद की प्राप्ति ।
- ५९ श्रीनारद द्वारा भण्ड का समुद्बोधन ।
देवर्षि तथा भण्ड का सम्वाद ।
शब्दरूपा भगवती का वर्णन ।
श्रीपुर में श्रीदेवी के शक्तिमण्डल का आविर्भाव का वर्णन ।
चित्तिस्वरूपा भगवती का परमार्थतया निरूपण ।

अध्यायसंख्या

विषयविवरण

पृष्ठसंख्या

	भगवती श्रीदेवी की कृपा से भण्ड को त्रैलोक्य के प्रभुत्व की प्राप्ति ।	६०३
६०	नारद एवं हारितायन के सम्वाद में भण्डासुर के विषय में वर्णन । कामेश्वरी के पतिरूप में भगवान् कामेश्वर का आविर्भाव । नारद के द्वारा भण्डासुर के भाग्य के लिये परामर्श । राक्षसराज भण्ड की सेना के साथ देवी शक्तियों का सज्जित हो युद्धार्थ आगमन । देवीकी शक्तियों का भण्ड की दैत्यसेना के साथ युद्ध । श्रीदेवी के साथ युद्ध करने को शीघ्रता करते हु ! भण्ड के मन का उद्वेग । राक्षसराज भण्ड के अपने भावी कार्य के लिए नाना प्रकार के सन्देश द्योतन ।	६०४ ६०५ ६०७ ६०६ ६११ ६१३ ६१५
६१	श्रीललिता की सेना की पूरी तैयारियाँ जानने के लिये दैत्यराज के द्वारा दूत भेजना । विजयमन्त्री द्वारा साम-दान दण्ड और भेद नीतियों का विवेचन । देवी की शक्तिसेना में प्रविष्ट दैत्यदूत अमित्रघ्न को दण्डनाथा द्वारा पकड़ लिया जाना । देवीकी आज्ञा से अमित्रघ्न को छोड़ना । शक्ति सेना में से लौट आये विद्युन्माली दूत द्वारा अपनी आँखों देखा शक्तिसेना की तैयारियों का वर्णन । दूत द्वारा भण्ड दैत्यराज के समक्ष देवीशक्तियों की युद्धसज्जा का वर्णन ।	६१७ ६१६ ६२१ ६२३ ६२५ ६२७
६२	अमित्रघ्न के द्वारा राक्षसराज के सम्मुख देवीशक्तियों का निरूपण । अमित्रघ्न द्वारा देवी के द्वारा भिजवाये गये सम्वाद का वर्णन । दैत्यराज भण्ड द्वारा इन सबको सुनने के अनन्तर अपने भावी कार्य के शुभफल की आशा से हर्ष । देवी की शक्ति सेना के साथ युद्ध करने के लिये दैत्य सेनाधिपति की तैयारियाँ करना । हस्तिसेनानायिका को दण्डनायिका का आदेश ।	६२८ ६२६ ६३१ ६३३ ६३५
६३	श्रीबालादेवी का समर में पराक्रमवर्णन । श्रीबाला के द्वारा राक्षससेना के संहार किये जानेपर कुटिलाक्ष द्वारा नाना तर्कवितर्कों का करना । बाला और रथनेत्री का सम्वाद । विशुक्र के द्वारा बाला का निरोध । फिर रथनेत्री तथा बाला का सम्वाद ।	६३७ ६३६ ६४१ ६४३ ६४५
६४	विशुक्र दैत्य के साथ बाला का युद्ध । विषङ्ग का बाला के साथ युद्ध । भण्डासुरराजके समक्ष बाला का आगमन । कुमारी तथा भण्डदैत्यराज का परस्पर युद्धकौशल में पराक्रम । भण्डराक्षस तथा बाला का युद्ध ।	६४७ ६४६ ६५१ ६५३ ६५५
६५	बाला का समर में पराक्रमवर्णन ।	६५६

अध्यायसंख्या

विषयविवरण

- भगवती के आदेश से वाला का युद्ध से लौटाकर लिवालाना और भगवती के पार्श्व में उसका स्थान ।
 देवी की सेना तथा राक्षसराज की सेनाओं में भयङ्कर युद्ध का वर्णन ।
 विशुक्र द्वारा सम्पत्करी के साथ युद्ध ।
 अश्वारूढा द्वारा भण्ड की माया की प्रतारणा ।
 कुमारी एवं भण्ड दोनों का पराक्रम निरूपण ।
 ६६ सम्पत्करी एवं अश्वारूढा द्वारा दुर्मदराक्षस का वध ।
 भण्डासुर का अपने सेनापतियों से परामर्श करना ।
 शक्तिगण से युद्ध करने को दुर्मद का प्रयास ।
 शक्तिसेना तथा दैत्यसेना का युद्ध ।
 दुर्मदका देवी के साथ युद्ध ।
 ६७ नकुली के पराक्रम से करङ्गादि दैत्यगण का वध ।
 कुरण्ड द्वारा अश्वारूढा को युद्ध के लिये ललकारना ।
 कुटिलाक्ष के आदेश से पाँच दैत्य सेनापतियों की अध्यक्षता में शक्तिसेना से लड़ने को तत्पर होना ।
 कोलमुखी को वारण कर मन्त्रनाथा देवी द्वारा युद्ध की तैयारी करना ।
 ६८ नकुली का पराक्रम ।
 विषङ्ग को कुटिलाक्ष का समझाना ।
 देवीकी माया से मोहित कुटिलाक्ष का विषङ्ग को प्रबोधन
 श्रीदेवी की आज्ञा से तिरस्करिणी द्वारा दैत्यसेना को नष्ट-भ्रष्ट करना ।
 तिरस्करिणी द्वारा बलवान् दैत्य की पराजय ।
 ६९ विषङ्ग के छलयुद्ध का वर्णन ।
 वाला के साथ भण्ड के पुत्रों का युद्ध ।
 कुटिलाक्ष के साथ जम्भिनी का युद्ध ।
 मन्त्रिणी एवं विशुक्रका युद्ध ।
 दैत्यों का श्रीचक्रपर आक्रमण ।
 ७० विषङ्ग की पराजय का वर्णन ।
 युद्ध में कामेश्वरी तथा विषङ्ग का सम्वाद
 कामेश्वरी द्वारा विषङ्ग के सामने उसे तिरस्कार युक्त वचनों से निन्दित करना ।
 विषङ्ग का वध करने को दण्ड साम्राज्ञी द्वारा उभय करना ।
 ज्वालामालिनी का द्वारा शत्रु को रोकने के लिये साल के निर्माण का वर्णन ।
 ७१ श्रीचक्र के विनाश के लिये विशुक्र द्वारा विघ्नयन्त्र का प्रयोग ।

अध्यायसंख्या

विषयविवरण

पृष्ठसंख्या

	विशुक द्वारा विषङ्ग को प्रबोधन ।	७१७
	विघ्नयन्त्र द्वारा श्रीचक्र को नाश करने का प्रयत्न ।	७१६
	शक्तिगणों पर विघ्नयन्त्र के प्रभाव का वर्णन ।	७२१
	बाला के साथ भण्डपुत्रों का युद्ध ।	७२३
७२	उभयपक्ष की सब सेनाओं का आगमन ।	७२५
	गणेश और विशुक का युद्ध ।	७२७
	अपने पराक्रम को काम में लेने के लिये श्रीदेवी से निवेदन के लिये बाला की व्यग्रता ।	७२६
	दण्डिनी के लिये बाला द्वारा अपना अभिप्राय वर्णन ।	७३१
	भण्ड के तीस पुत्रों का आगमन ।	७३३
७३	भण्ड के महावीर पराक्रमशील पुत्रों का वध ।	७३५
	गणेश और गजासुर का परस्पर मुष्टिका युद्ध ।	७३७
	बाला द्वारा प्रदर्शित पराक्रम का वर्णन ।	७३६
	बाला द्वारा दैत्यसेना के विध्वंस का वर्णन ।	७४१
	विषङ्ग एवं विशुक की मृच्छा ।	७४३
७४	दोनों पक्षों की सेना का समागम ।	७४५
	विशुक एवं विषङ्ग द्वारा भण्ड के शोक को दूर करने के लिये चेष्टा ।	७४७
	श्रीरथ चक्र में विराजी श्रीमाता के सामने शक्तिसेनाओं की सज्जा का वर्णन ।	७४६
	युद्ध में विशुकपुत्रों की स्थिति ।	७५१
	पुत्र शोक में व्याकुल दैत्यराज विशुक का युद्ध के लिये प्रयत्न ।	७५३
	विशुक के वध से विष्णु आदि देवप्रमुखों एवं शक्तियों द्वारा जयकार वर्णन ।	७५५
७५	विषङ्ग के वध का उपक्रम ।	७५६
	स्तम्भिनी द्वारा विशिख दैत्य के साथ युद्ध ।	७५७
	मोहिनी और विकटेश्वर का युद्ध ।	७५६
	देवी की शक्तियों द्वारा राक्षसगण से युद्ध ।	७६१
	युद्ध में विषङ्ग द्वारा माया का प्रसारण करना ।	७६३
	विषङ्ग का वध ।	७६५
७६	भण्ड का श्रीदेवी के चरणों के दर्शन से इष्टप्राप्ति होने पर सन्तोष ।	७६६
	मन्त्रमहाराज्ञी के साथ भण्ड का युद्ध ।	७६७
	दोनों पक्षों की सेनाओं के युद्ध क्षेत्र में पूर्ण सज्जासहित आधमकने के कारण उठी धूलि से आकाश का छाजाना ।	७६६

अध्यायसंख्या

विषयविवरण

पृष्ठसंख्या

दोनों पक्षों की सेनाओं में मारकाट मचजाने से मन्त्रिणी आदि शक्तियों द्वारा शक्तिसंघ की सहायतार्थ आगमन ।
 दैत्यराज और उसके सारथि का परस्पर संवाद ।
 विशुक्र के वध से देवप्रमुखगण तथा शक्तिसेना द्वारा भगवती का जयजयकार एवं ब्रह्माण्ड में शान्ति ।

७७

भण्डासुर के वध का वर्णन ।
 श्रीललिता एवं दैत्यराज भण्ड के बीच परस्पर युद्ध ।
 भण्ड द्वारा अपनी माया का प्रसार करना ।
 दैत्य की त्रास से शक्तिगण की रक्षा करने के लिये मन्त्रिणी द्वारा श्रीदेवी की प्रार्थना ।
 दैत्यपति का भण्ड का वध ।

७८

मेरु पर्वत के शिखरपर श्रीललिता भगवती की स्तुति करते हुए देवगण द्वारा उसमें श्रीचक्र का अभिषेक करना ।
 श्रीपुरराज के प्रतिविम्ब के समान भगवती के पुर का निरूपण ।
 श्रीचक्रराज पुर में महादेवी का अभिषेक ।
 श्रीपरादेवी के प्रति भक्तिभाव की प्राप्ति के सोपान के फल के सहित चरित्र श्रवण की फलश्रुति का वर्णन ।

७९

दत्तात्रेय परशुराम सम्वाद प्रकरण में आगम शास्त्रों के स्वरूप का वर्णन ।
 आगमों के महत्त्व का वर्णन ।
 वैदिक एवं तान्त्रिक सिद्धान्तों की तुलना और एकवाक्यता ।
 वेदों में परोक्षवाद के रूप में अविशेष तत्त्व का गोपन ।
 तन्त्रशास्त्र की वैदिक सम्प्रदाय से अविरुद्ध सङ्गति ।

८०

उपासक के मुख्य धर्म का वर्णन ।
 विभिन्न यन्त्रों में श्रीदेवी की पूजा का वर्णन ।
 श्रीचक्रादि में महादेवी के पूजन के विधान का वर्णन ।
 नाना विधानों से देवी की आराधिका का फल वर्णन ।
 श्रीचक्रराज के दान के फल का महत्त्व ।
 इस सम्प्रदाय की दीक्षा लेने की फल श्रुति ।
 दीर्घकाल तक उपासना करने से ही भगवती श्रीत्रिपुरा की भक्ति की प्राप्ति ।